उत्तराखंड में पिघलते ग्लेशियर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखंड के **पिथौरागढ़ ज़िले** में रणनीतिक रूप से **मुनस्यारी-मिलम सड़क** के किनारे **जौहर घाटी** की ओर एक **ग्लेशियर** स्खलन/फिसलने की घटना हुई, जिससे **भारत-चीन सीमा** और क्षेत्र के गाँवों का संपर्क प्रभावित हुआ।

मुख्य बिंदु:

- **सीमा सड़क संगठन (BRO)** ने सड़क साफ करने के प्रयास शुरू कर दिये हैं लेकिन व्यापक बर्फबारी के कारण चुनौतियाँ बरकरार हैं।
  - विशेषज्ञ इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ग्लेशियर का टूटना **जलवायु परिवर्तन** के बढ़ते प्रभावों की स्पष्ट चेतावनी देता है।
  - **ग्लोबल वार्मिंग** के प्रभावों के प्रति संवेदनशील **हिमालय क्षेत्र** को बढ़ते जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें तेज़ी से ग्लेशियर पिघलना भी शामिल है।
- मार्च 2024 में पिथौरागढ़ के ऊपरी क्षेत्रों में **हिमपात** देखी गई थी। अब तापमान बढ़ने के साथ ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे **हिम-स्खलन** हो रहा है और कभी-कभी हिमखंड भी टूट रहे हैं।

सीमा सड़क संगठन

- BRO की परिकल्पना और स्थापना **वर्ष 1960 में पंडित जवाहरलाल नेहरू** द्वारा देश के **उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों** में सड़क निर्माण में तेज़ी से विकास के समन्वय के लिये की गई थी।
- यह **रक्षा मंत्रालय** के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।
- इसने निर्माण एवं विकास कार्यों के स्तर में व्यापक विविधता ला दी है, जिसमें**हवाई क्षेत्र, निर्माण परियोजनाएँ, रक्षा कार्य और सुरंग बनाना शामिल है** तथा जनता के प्रति काफी लोकप्रिय है

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/melting-glacier-in-uttarakhand